International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 37-39

तुलसी काव्य में दार्शनिक मूल्य

डॉ० अनुष्का तिवारी
पी–एच०डी० (हिन्दी), अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
गोस्वमी तुलसीदास के दो प्रमुख ग्रंथ रामचरित मानस एवं विनय पत्रिका दार्शनिक चिन्तन पर आधारित प्रमुख ग्रंथ है। दर्शन का सात्वि अर्थ है देखना प्रायः सांसारिक मानव जागतिक पदार्थो, वस्तुओं, संबधों एवं सुख–दुख के स्थूल स्वरूपों को देखता है, और इस दृश्यमान जगत को ही सच्चा मान लेता है। दर्शन शब्द का तात्पर्य केवल जगत को देखना ही पूर्णतः सही नहीं है। दर्शन के अन्तरगत ''सृष्टि से निर्माता को देखना'' आत्मसात करना अनुभव में लाना एवं तद्विषयक चिन्तन करना दर्शन है। दर्शन शब्द का प्रयोग वर्तमान में किसी भी क्रमबद्ध सुव्यवस्थित विचार धारा को कहा जाने लगा है, भले ही वह अध्यात्मपरक दर्शन ना हो। जैसे राजनैतिक दर्शन, आर्थिक चिन्तन दर्शन, सामाजिक दर्शन इत्यादि। अब इन दोनों प्रयोगों को एक साथ जोड़कर देखें तो दर्शन विषयक परिभाषा इस प्रकार भी की जा सकती है। जिस ज्ञान का क्रमवत आद्योपान्त, कार्यकारण एवं परिणामपरक अध्ययन करके एक व्यवस्थित सिद्धान्त प्रतिपादित किया जाता है वह दर्शन है।

मूल शब्द : तुलसीदास, रामचरित मानस, दार्शनिक मूल्य।

प्रस्तावना
गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में अपने चिन्तन को दार्शनिक स्वरूप प्रदान किया है। विशेषतः अध्यात्म दर्शन पर गहन चिन्तन एवं मत प्रस्तुत हुए हैं, यूँ तो रामचरित मानस में सामाजिक दर्शन, राजनैतिक दर्शन के स्वरूप भी दिख जाते हैं, किन्तु उनका विवेचन यथास्थान मूल्यों के अन्तर्गत किया जा चुका है। इस उपशीर्ष के अर्न्तगत अध्यात्म परक दर्शन का मूल्यांकन करना ही शोध का लक्ष्य हैं। गोस्वामी जी ने अपने दार्शनिक तत्वों को निम्नांकित चार वर्गो में विभक्त किया है –

ब्रहम दर्शन
गोस्वामी जी ने ''सर्वखल्व निदम ब्रह्म'' के अनुसार ब्रहम को सर्वत्र सब में स्वीकार किया है। ब्रहम की व्याप्ति चिरककालिक है, सार्वभौमिक है, शाश्वत है, ब्रहम अविनाशी है, अजर, अमर है, सच्चितानंद है परम प्रकाश का पुंज है। ब्रहम अजन्मा है, निराकार है।

यह ब्रहम का निर्गुण स्वरूप है, जिसे शंकर जी पार्वती के समक्ष रखते है। यज्ञवल्क्य भरद्वाज को समझाते है, और काकभुशुंण्ड़ि गरूण के सामने राम इस रहस्य का उद्घाटन करते है। तुलसीदास का ब्रहम दर्शन केवल निर्गुण हो ऐसा नहीं है। वह निर्गुण निराकार के साथ–साथ सगुण साकार भी है, अर्थात् तुलसी के ब्रहम में निर्गुण और सगुण दोनों की विशेषताएँ एक साथ परिलक्षित होती है। इसलिए गोस्वामी जी का दर्शन एकदम से अद्वैतवादी नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि इस सिद्धांत में तो ब्रहम को एक माना जाता है, किन्तु इसके अनेक रूप या जन्म या अवतार नहीं होते यह अद्वैत गोस्वामी तुलसीदास का अभीष्ट दर्शन नहीं है। इसमें अद्वैत के साथ–साथ द्वैत का भी समावेश है, अतः कुछ विचारकों नपे तुलसी के दर्शन में द्वैताद्वैत का निरूपण किया। इसका तात्पर्य यह होता है, कि तुलसी में द्वैत भी है और अद्वैत भी है। इससे एक कदम आगे बढ़कर एक मत और प्रस्तुत हुआ। विशिष्ट द्वैतवाद का इसके अनुसार तुलसी का ब्रहम द्वैत नहीं है बल्कि अद्वैत में ही कुछ विशेष प्रकार का है।

उसकी विशिष्टता शुद्ध अद्वैतवादियों से थोड़ा पृथक है। इसका कारण यह है, कि तुलसीदास के ब्रहम राम धरती पर जन्म लेते है, लीलाएँ करते है, मानवीय गुणों को धारण करते है, फिर भी ब्रहम बने रहते है। उनकी यह अद्वैतता एक विशेष प्रकार की है। वह भक्तों के लिए धरती पर अवतरित होते है। अपना स्वरूप प्रकट करते है। इसलिए यह ब्रहम कुछ विशेष प्रकार के है। अतः विशिष्ट अद्वैत है।

अभी तक तुलसीदास जी के अद्वैत का शास्त्रीय विवेचन संक्षेप में हुआ है, उनकी रचनाओं में यह अद्वैत तत्व किस प्रकार से प्रकट हुआ है। इस कतिपय उदाहरणों से प्रस्तुत किया जा रहा है। शंकर पार्वती के प्रश्न पर प्रथमतः विशुद्ध अद्वैत का दर्शन प्रस्तुत करतें है।

''राम सच्चिदानन्द दिनेसा, नहि कह मोह निसा लव सेषा''[1]
राम ब्रहम व्यापक जगजाना। परमानन्द परेश पुराना।।

इसी प्रकार कागभुशुंण्ड़ि भी अपना मत प्रस्तुत करते है, जिसमें ब्रहम को शुद्ध सच्चिदानंद के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

''सोहमस्मि इति वृत्ति अखंण्डा, दीपशिखा सोई परम प्रचण्डा''[2]

एक दशा में वे पुनः कहते हैं कि –

''जो चेतन कह जड़ करयै, जड़हि करय चैतन्य''[3]

एक स्थल पर पुनः करते है कि –

''मसकहिं करइ विरंचि प्रभु, अजहि मसक ते हीन''[4]

उपर्युक्त सभी लक्षण विराट ब्रंहम विषयक है। यह ब्रहम अखिल सृष्टि का नियामक होकर भी सब कुछ करते हुए भी स्वयं कुछ नहीं करता। इसे बहुत ही सरल शब्दों में गोस्वामी तुलसी दास ने प्रस्तुत किया है।

''पग बिनु चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु करै कर्म विधि नाना।।''

यह अद्वैतस्वरूपी ब्रहम ही भक्तों के लिए उनके विशेष अनुरोध पर किसी ना किसी सरकार रूप में अवतरित होता है। इसी अवतारवाद का विस्तृत विवेचना मानस में दर्शया गया है। ब्रहम ही दशरथ सुमन कौशलपति भगवान बनता है –

जेहिं इमि गावहिं वेद बुध जाहिं धरहि मुनि ध्यान।
सोई अज प्रेम भगति वश कौशल पति भगवान।।

इस स्थिति पर पहुचकर अद्वैत विशिष्ट द्वैत में परणित हो जाता है। यही ब्रहम दर्शन रामचरित मानस में आदि से अन्त तक विकसित हुआ है।

आत्मा

आत्मा एवं जीव परमात्मा का ही अंश या एक चिंगारी हैं आत्मा जो शरीर रूप में धरती पर जन्म लेकर अनेक चेष्टाएँ करती है। अनेक विचारक यह मानतें हैं कि परमात्मा और आत्मा में कोई अंतर नहीं है, किन्तु तुलसीदास आत्मा और जीव को दो स्तरों पर देखतें है। जो सांसारिक मायामोह में बंधनों में फसा है। वह आत्मा होकर भी अब जीव हो गया है, अतः यदि वह चेतन अमल अपने स्वरूप को पहचानने वाला है तब तो आत्मा है और यदि कदम–कदम पर सांसारिक प्रपंचों में उलझा है तो जीव है। दोनों स्थितियों को अलग–अलग तुलसीदास जी इस प्रकार कहते है –

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।
चेतन अमल सहज सुखरासी।।
ईश्वर जीवहिं नहि कुछ भेदा।
बारि बीचि इमि गावहिं वेदा।।

उपर्युक्त दोनो चौपाईयों में जीव और ब्रम्ह में अभेद संबंध बताया गया है, अर्थात् ब्रहम और जीव में कोई भी अंतर नहीं है, किन्तु जब गोस्वामी जी व्यवहारिक धरातल पर विचार करते है तब उन्हें अंतर भी दिखाई देता है। जीव ईश्वर नहीं हो सकता, क्योंकि जीव जैसे ही धरती में जन्म लेता है, वैसे ही माया में लिपटा जाता है। फलतः कुछ ऐसा जीव का रूप प्रकट होता है –

भूमि परत भा ढाबर पानी, जिमी जीवहिं माया लपटानी।

आकाश में रहने वाला जल निर्मल है धरती पर आते ही मटमैला हो जाता है।[5] ठीक इसी प्रकार ब्रहम का अंश होते हुए भी जीव जब माया में लिपटता है, तब उसका स्वरूप गंदला हो जाता है। वह आत्मतत्व को विस्मृत कर जाता है। इसीलिए गोस्वमी जी यह घोषणा करते है, कि जीव कि इस समान अर्थात् क्या कभी जीव भी ईश्वर के समान हो सकता है? यह अवधारणा ब्रहम और जीव के बीच अंतर निरूपित करती है। इसीलिए द्वैत की स्थिति उत्पन्न होती है।

माया

भारतीय दर्शन शास्त्रियों ने माया के दो भेद किए है –

1) विद्या माया
2) अविद्या माया।

जो जागातिक जीवों को भटकाती है। लोभ, मोह के बंधनों में बांधती है, वह अविद्या माया है। किन्तु जो माया सृष्टि का सृजन करती है। शक्ति बनकर हर जीव में व्याप्त होती है। जो ब्रम्हा की कारिका शक्ति है वह विद्या माया है।

उदाहरण से इस बात को देखें तो राम यदि ब्रहम हैं तो सीता परम शक्ति है फलस्वरूप विद्या माया है। राम मायापति भगवान हैं और सीता उनकी माया है। माया का अविद्या स्वरूप जीव को विमोहित करता है। उसे नाना प्रपंचों में उलझाता है, और इसी से यह मिथ्या संसार चलता है।

गोस्वामी तुलसी दास का मानना यह है कि यदि मायापति की शरण में पहुँच जाएँ तो इनकी दासी होने के कारण अविद्या माया ऐसे भक्तों का कुछ नहीं बिगाड़ पाती, क्योकि ऐसे समर्पित भक्तों की रक्षा स्वतः मायापति करते है। इसके ठीक विपरीत ज्ञानवादी अद्वैत दर्शन के अनुगामी होते है। जिन्हे अविद्या माया काम,क्रोध, मोह, लोभ, मत्सर के रूप में इन्द्रिय दोषों के कारण परेशान होना पड़ता है। अतः अद्वैतवादी अपने साधनापथ से शीघ्र ही पतित हो सकता है और अविद्या के आगे पराजित हो सकता है।

माया का यह दर्शन गोस्वामी जी के इसी पात्र कागभुशुंण्डि के माध्यम से प्रस्तुत होता है।

जगत

संसार के संबंध में भारतीय दर्शन जो दृष्टिकोण प्रस्तुत करता उसमें पलायन बाद का पुट दिखता है। जगत को यहॉ पर मिथ्या माना गया है। वेदान्त दर्शन का एक मात्र सूत्र है, ''ब्रह्म सत्य जगन मिथ्या'' जिसका तात्पर्य यह है, कि ब्रहम ही परम सत्य है और सारा जगत झूठा है इसे गोस्वामी जी इस प्रकार प्रस्तुत करते है।

''उमा कहहुँ मय अनुभव अपना, सत हरि भजन जगत सब सपना।''

यह संसार स्वप्न तुल्य झूठा है तुलसी दास दृष्टान्त प्रस्तुत करते है, कि स्वप्न में किसी व्यक्ति को काटकाट कर टुकड़े दिया जाता है, किन्तु जागृत अवस्था में वह सही नही होता, ठीक इसी प्रकार जगत का रूप जैसा दिखाई पड़ता है वैसा ही सही नहीं है। वह क्षण भंगुर है, असत्य है, नित्यमिट जाने वाला है, नित्य परिवर्तित हो रहा है। जो कल था आज नहीं है, जो आज है वह कनल नहीं रहेगा, यह जगत विषयक दर्शन मानसकार ने भी प्रस्तुत किया है, साथ ही सारे भारतीय दर्शन का भी यही सार है। जगत को समझना, आत्मा को समझने की पहली सीढ़ी है और आत्मा को समझ लेने पर आत्मा और परमात्मा में कोई अंतर नहीं रह जाता, यह ''सोअह'' कि स्थिति हुआ करती है।

जिसके पक्ष में गोस्वमी जी बहुत कम है, क्योंकि वे भली भांति जनते है, कि जीव संसार में मुक्त होगा नहीं, उसे आत्मज्ञान होगा नही और वह इस जगत में ब्रहम बन नहीं पाएगा। अतः सोअहं की ज्ञान साधना एक कल्पना मात्र रह जाएगी। इसमें अच्छा यही होगा कि जीव प्रभु श्री राम के शरण में आ जाए अपने को सर्वतो भावेन समर्पित कर दें, क्योंकि उससे ज्ञान मार्ग सधने वाला नहीं वह क्लिष्ट है, असंभव भले ना हो किन्तु दुरूह अवश्य है।

गोस्वामी तुलसीदास का दर्शन विषयक मूल्य उपर्युक्त बिन्दुओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया यदि विनय पत्रिका में झॉककर देखें तो वहॉ एक मत प्रस्तुत होता है।

''कोउ कह सत्य झूट कह कोउ जुगल प्रबल कोउ माने'' अर्थात् कुछ लोग माया को सत्या कहते है। कुछ लोग झूठा मानते है, इस प्रकार इस कथन को ''सत्य असत्य सत्यासत्य'' के नाम से पुकारा जाता है। यदि इसे ही तुलसी की मूल मत मान जिया जाये तो वे विशिष्टाद्वैत के मार्ग के विचारक के रूप में प्रस्तुत होते है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सारे विवेचन के पश्चात् हम इसी निष्कर्ष पर पहुॅचते हैं कि गोस्वमी तुलसीदास का दर्शन, चिन्तन बहुत ही व्यवहारिक है, ना तो वह शंकराचार्य के दर्शन जैसा क्लिष्ट है न सतया से परे है। भारतीय दर्शन को थोड़े से उदाहरण के द्वारा प्रस्तुत करना तुलसी की निजी विशेषता है। अतः यह कहनू में तलिक भी संकोच नही होता कि तुलसीदास के काव्य में भक्ति परक मूल्य जितने सशक्त हैं उतने अध्यात्म दर्शन के मूल्य नहीं। शुष्क दार्शनिक चिंतन तुलसीदास को प्रिय नही है वे उसे भक्ति रस में लपेटकर ग्राह्य और सुरूचिपूर्ण बना देते है, इसलिए उनका दार्शनिक चिंतन केवल वेदान्तवेत्ताओं के लिए नहीं है, बल्कि सबके लिए जो थोडा बहुत भी समझशक्ति रखते है, उपयोगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. कबीश्वर ठाकुर – रामचरित मानस का सौन्दर्य तत्व।
2. डॉ. लहरी सिंह – स्वांन्त : सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।
3. डॉ. विष्णुदत्त शर्मा – रामचरित मानस मूल्यांकन एवं युद्ध पद्धति।
4. डॉ. कवीश्वर ठाकुर – रामचरित मानस का सौन्दर्य तत्व।
5. डॉ. रामबाबू शर्मा – तुलसी काव्य, नये पुराने सन्दर्भ।